अख्तर के अब्बा कौन?

अनीता रामफल

अख्तर गणित में तेज़ है और रेडियो भी ठीक कर लेता है। उसके दोस्त उस पर नाज़ करते हैं और कई चीज़ें देखने या सीखने के लिए उसके पीछे पड़े रहते हैं। उन्होंने नई टीचर को बताया है कि अख्तर यह सब करतब घर पर ही सीख लेता है, क्योंकि वह एक इंजीनियर का बेटा है। एक दिन अचानक नई टीचर की मुलाकात अख्तर के अब्बा से कचहरी में हो गई और उन्हें पता चला कि वे एक बड़े वकील हैं। टीचर कुछ चक्कर में पड़ गई। अख्तर के दोस्त उसे इंजीनियर का बेटा कह रहे थे, पर उसके पिता तो वकील हैं! यह कैसे?

क्यों, तुम भी चक्कर में पड़ गए? भई बात ही कुछ ऐसी है। इंजीनियर अख्तर के पिता नहीं, मां है। अब यह सोचने की बात है कि अख्तर के अब्बा से मिलकर टीचर चक्कर में क्यों पड़ गई? सच्चाई यह है कि केवल टीचर ही नहीं, और भी कई लोग क्षण भर के लिए चक्कर में पड़ जाएंगे। तुम चाहो तो आजमा कर देख लो। पर ऐसा क्यों होता है? यह क्यों नहीं होता कि लोगों के ध्यान में झट से यह आए कि अख्तर की मां इंजीनियर है। शुरू में जब अख्तर का परिचय मिलता है तो हम सभी क्यों अपने-अपने दिमाग में यह छवि बना लेते हैं कि इंजीनियर तो उसके पिता होंगे। ऐसा क्यों।

मां की उपेक्षा

क्या ऐसा इसलिए है कि अक्सर बच्चे का (या किसी बड़े का भी) परिचय उसके पिता के नाम से ही दिया जाता है? स्कूल में भर्ती के समय भी तुम्हारे पिता का नाम ही फार्म में भरा गया था। तुमने कभी सोचा कि तुम्हारी मां का नाम भी क्यों नहीं मांगा गया? आखिर तुम्हारे जन्म में, पालन-पोषण में तुम्हारी मां की भागीदारी तुम्हारे पिता से कुछ कम तो नहीं? फिर क्यों हमारी पहचान केवल पिता के नाम से ही की जाती है? मैंने तो एक आदत ही बना ली है, जब भी पिता का नाम लिखवाया जाता है मैं वहां साथ में मां का नाम भी लिख देती हूं। आखिर बेटी तो दोनों की हूं, फिर मां को क्यों भुला दूं।

यह हो सकता है कि इंजीनियर ज़्यादातर पुरुष ही होते हैं, इसलिए हमारे दिमाग में इंजीनियर की छवि पुरुष के रूप में ही बनती है। जैसे जब कोई नर्स कहता है तो हमेशा महिला की छवि सामने आती है। वैसे अन्य देशों में पुरुष भी नर्स होते हैं, पर हमारे यहां आमतौर पर महिलाएं ही नर्स होती हैं। ख़ैर यह तो हम जानते हैं कि इंजीनियरों में महिलाओं की तादाद कम है। पर ऐसा क्यों है? क्या यह इसलिए कि महिलाओं में इंजीनियर बनने की 'क्षमता' नहीं है? पर यह 'क्षमता' होती क्या है और कहां से आती है? क्योंकि अवसर और अनुकूल माहौल मिलने पर महिलाएं इंजीनियर भी बनती हैं, वैज्ञानिक, वकील या डॉक्टर भी! आज महिलाएं कई ऐसे व्यवसाय चुन रही हैं या काम कर रही हैं, जो सदियों से पुरुषों

तक ही सीमित थे। तुम बता सकते हो ऐसे कुछ कामों के उदाहरण? हां, यह ज़रूर है कि ऐसे कामों में महिलाओं की संख्या अभी कम है। पर क्यों?

सही अवसरों की कमी

सही अवसर दरअसल लड़की को शुरू से ही नहीं मिलते। उसकी तो पैदाइश पर ही लोग अफसोस मनाते हैं, जबकि लड़का जन्मे तो दूर-दूर तक बधाइयां गूंजती हैं। जन्म से जो भेदभाव शुरू होता है, जीवन भर लड़की का पीछा नहीं छोड़ता। अनेक घरों में खाने की पौष्टिक और बढ़िया चीज़ों, जैसे दूध या फल पर लड़कों का अधिकार पहले होता है। लड़की और उसकी मां के लिए तो बचाखुचा खाना ही होता है। लड़की को स्कूल भेजना भी उतना ज़रूरी नहीं समझा जाता, जितना लड़के का। और यदि लड़की स्कूल गई भी तो कुछ कक्षाओं के बाद उसकी पढ़ाई समाप्त कर दी जाती है। कारण यही कि या तो ब्याह दी जाती है या फिर घर के काम में इतनी फंसा दी जाती है कि पढ़ाई उसे निरर्थक लगने लगती है। उसे लगने लगता है उसका प्राथमिक काम तो घर संभालना है।

घर के काम में बेशक कोई बुराई तो नहीं, वह तो करना ही है। पर यदि घर के ये काम लड़के और लड़की दोनों मिलकर करें, तो फिर लड़की को वह मौके भी मिल सकें जो केवल लड़कों को मिल पाते हैं, जैसे घर के बाहर खेलकूद करना, स्कूल जाना, अन्य लोगों से मिलना, अपनी हिम्मत बढ़ाना आदि। अभी होता यही है कि एक को तो शुरू से ही तमाम बंदिशों में बांध देते हैं। उस पर ज़्यादा रोक-टोक लगाते हैं, उस पर घर के सभी काम थोप देते हैं, दुनिया भर के डर भर देते हैं। अब ऐसे में ज़ाहिर है कि उसकी क्षमता सीमित कामों में ही उभर पाएगी। तुममें से भी कितनी लड़कियां ऐसी होंगी जिन्हें छुटपन से ही घर के कामों में मां का हाथ बंटाना पड़ा है, घर के और कामों की ज़िम्मेदारी उठानी पड़ी है। जबकि तुम्हारे भाइयों को अधिक आज़ादी मिली है, खेलकूद और मस्ती करने के लिए अधिक समय और पढ़ाई के लिए अधिक व अनुकूल अवसर भी। क्या तुम्हें कभी लगा है कि तुम भी भैया की जगह होतीं तो क्या मज़ा मारतीं।

लड़कियों की क्षमता

यदि बचपन से ही लड़की और लड़कों को एक-सा पालें, एक-से अवसर दें, दोनों को सभी कामों से, समस्याओं से जूझना सिखाएं तो कोई कारण नहीं कि लड़कियां भी सभी तरह की भूमिका निभाने में सक्षम होंगी।

पर आज अधिकतर घरों में स्थिति ऐसी नहीं है। जहां बहादुर बनने की बात हो, या निडर होने की तो लड़के को ही यह सीख दी जाती है। उसे कहा जाता है लड़कियों की तरह मत रो, तू तो बड़ा बहादुर है। लड़कियों को जोखिम वाले कामों से, बिजली से, कीड़ों से, अंधेरे से और तमाम ऐसी चीज़ों से जिनमें एक डर होता है दूर ही रखा जाता है। यदि शुरू से ही उनको भी इन चीजों से लड़कों की ही तरह जूझने, उलझने दिया जाए तो पिछड़ने का कोई कारण नहीं।

हमारे देश में स्कूल जाने वाली लड़कियों की संख्या बहुत कम है। पर जब भी उन्हें अवसर और अनुकूल माहौल मिला है वे लड़कों से बीस ही रही हैं। अचरज की बात है कि अन्य देशों

की तुलना में हमारे देश में अधिक लड़कियां विज्ञान और इंजीनियरिंग पढ़ने के लिए जाती हैं। हमारे देश में उच्च शिक्षा के स्तर पर भी इंजीनियरिंग या तकनीकी शिक्षा पाने वाले विद्यार्थियों में लड़कियों की संख्या 45% से अधिक है। जबकि रूस या इंग्लैंड में कम ही है। फिर ऐसा क्यों है कि वैज्ञानिक, इंजीनियर या अन्य शोध क्षेत्रों में लड़कियां, लड़कों के मुकाबले कम ही आती हैं। शायद ऐसा इसलिए होता है कि कालेज में बी.एस-सी., एम.एस-सी. कर लेने के बाद उन्हें आगे पढ़ने और शोध आदि का मौका ही नहीं मिल पाता। वजह वही कि पहले उनका ब्याह होता है और फिर परिवार, बच्चों की जिम्मेदारियां उनका रास्ता रोकती हैं। शायद इसीलिए हमारे दिमाग में एक वैज्ञानिक या इंजीनियर के रूप में महिला कम ही आती है।

इन सभी विज्ञान और इंजीनियरिंग पढ़ने वाली महिलाओं में से अख़्तर की मां भी एक है। पर उन्हें अपनी पढ़ाई जारी रखने का न केवल अवसर मिला बल्कि माहौल भी, तभी वे अपनी ट्रेनिंग पूरी करके नौकरी कर सकीं। ब्याह भी हुआ, अख़्तर और उसकी नन्ही बहन सबीहा भी पैदा हुई, पर उन्होंने अपनी नौकरी नहीं छोड़ी। अख़्तर के अब्बा वकील हैं। बहुत व्यस्त रहते हैं। पर घर का काम भी करते हैं। खाना पकाना, कपड़े या बर्तन धोना, बच्चों को तैयार करना, हर काम में उनकी भागीदारी रहती है। अख़्तर भी घर के सभी काम सीख रहा है ताकि आगे चलकर वह भी अब्बा जैसी भूमिका निभाएगा।

साभार—चकमक